Content

:: अनुक्रमणिका ::

प्रथम अध्याय : विषय-प्रवेश पृ. 001 -082

प्रास्ताविक — उपन्यास और गद्य — यथार्थ और भाषा का संबंध — एक ही लेखक की भाषाशैली के विविध स्तर — शिल्प-सजगता और भाषा — चरित्र और भाषा — परिवेश और भाषा — शिवानीजी के उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय — शिवानीजी के व्यक्तित्व का संक्षिप्त परिचय — अन्य शैलीकारों से तुलना — निष्कर्ष — सन्दर्भानुक्रम ।

द्वितीय अध्याय : विषय-वस्तु एवं चरित्र-सृष्टि की दृष्टि से शिवानीजी के उपन्यासों की भाषा पृ. 083-128

प्रास्ताविक — विषयवस्तु एवं भाषा का संबंध — समसामयिक विषय-वस्तु और भाषा — ऐतिहासिक-सांस्कृतिक विषय-वस्तु और भाषा — नगरीय और ग्रामीण विषय-वस्तु और भाषा — चरित्र-सृष्टि में भाषा का योग — भाषा में प्रयुक्त विचार और चरित्र — चरित्रों के विभिन्न स्तर : स्त्री-पुरुष , बालक , युवा , वृद्ध , शिक्षित , अशिक्षित , ग्रामीण , नगरीय — विभिन्न व्यवसायों से संलग्न चरित्र और उनकी भाषा — भाषा चरित्र के अन्तर्मन का आईना — निष्कर्ष — सन्दर्भानुक्रम ।

तृतीय अध्याय : परिवेश की दृष्टि से शिवानी के उपन्यासों की भाषा

पृ. 129-163

प्रास्ताविक — परिवेश-निर्माण में भाषा का योग — नगरीय परिवेश : मुंबई , दिल्ली , कलकत्ता — ग्रामीण परिवेश — पहाड़ी परिवेश — हिन्दू परिवेश — मुस्लिम परिवेश —

ईसाई परिवेश — पारसी परिवेश — बांग्ला परिवेश — उनके उदाहरण — निष्कर्ष — सन्दर्भानुक्रम ।

चतुर्थ अध्याय : शब्द-विचार : 1 पृ. 164-208

प्रास्ताविक — विविध भाषाओं के शब्द : संस्कृत शब्द , अरबी-फारसी या उर्दू के शब्द , अंग्रेजी के शब्द ; — अन्य भाषा तथा बोलियों के शब्द : बंगला भाषा के शब्द , गुजराती के शब्द :, पंजाबी , मराठी , नेपाली , ब्रज और कुमाऊंनी के शब्द — तत्सम , तद्भव , देशज शब्द — नवीन शब्द-प्रयोग — वर्णमैत्री वाले शब्द — ध्वन्यात्मक शब्द — ध्वनि-पुनरावर्तन वाले शब्द — क्रियाओं के कुछ नये प्रयोग — शब्दों का हिन्दीकरण — आधुनिक सभ्यता से जुड़े हुए शब्द — विविध नामों से जुड़े हुए शब्द — विभिन्न विषयों से से जुड़े हुए शब्द — गुजराती से मिलते-जुलते शब्द — निष्कर्ष — सन्दर्भानुक्रम ।

पंचम अध्याय : शब्द-विचार-2 पृ. 209-258

प्रास्ताविक — नये उपमान — नये रूपक — नये विशेषण विशेषण-पदबंध — कहावत और मुहावरों के नये प्रयोग — निष्कर्ष — सन्दर्भानुक्रम ।

षष्ठ अध्याय : शिवानीजी की भाषाशैली के कतिपय अभिलक्षण

पृ. 259-323

प्रास्ताविक — उद्धरण —संस्कृत के उद्धरण , अंग्रेजी के उद्धरण, बंगला के उद्धरण —कुमाऊंनी बोली के उद्धरण , हिन्दी के

अवतरण -- सूक्तियां -- कहावत -- कहावतों का नये ढंग से प्रयोग -- मुहावरे -- भाषा की विविध शैलियां : समास-शैली , व्यास-शैली , प्रौढ़ या विदग्ध शैली , सरल-मधुर शैली , व्यंग्यात्मक शैली , आंचलिक शैली , आलंकारिक शैली , संस्कृत-परिनिष्ठित शैली , अरबी-फारसीवाली शैली -- शिवानीजी के गद्य की कुछ विशेषताएं : सार्थक कथोपकथन , संकेतात्मकता , संक्षिप्तता , बहुश्रुतता , प्रतीकात्मकता , हास्य-व्यंग्य , नवीन भाषाभिव्यंजना -- शिवानी-जी के गद्य की मर्यादाएं -- निष्कर्ष -- सन्दर्भानुक्रम ।

सप्तम अध्याय : उपसंहार पृ. 324-335

समग्रावलोकन -- उपलब्धियां -- संभावनाएं ।

संदर्भिका : पृ. 336-343

परिशिष्ट -1 : उपजीव्य ग्रंथों की सूची

परिशिष्ट -2 : सहायक ग्रंथों की सूची (हिन्दी)

परिशिष्ट -3 : अंग्रेजी सहायक-ग्रंथ तथा हिन्दी-अंग्रेजी के कोश-ग्रंथ

परिशिष्ट -4 : पत्र-पत्रिकाएं (हिन्दी-गुजराती-अंग्रेजी)

xxxxxxx

xxxxxxxxx